

लगान का आधुनिक सिद्धांत (Modern Theory of Rent)

सिद्धांत का प्रतिपादन - श्रीमती जॉन रोबिनसन

जॉन रोबिनसन ने लगान की व्याख्या रिकार्डो के समान **एक बचत** के रूप में की है।

- ❖ आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार लगान केवल भूमि को ही नहीं बल्कि उत्पादन के अन्य साधनों को भी प्राप्त होता है इस
- ❖ जिस प्रकार भूमि की मात्रा सीमित होती है, उसी प्रकार **पूंजी** की मात्रा भी सीमित होती है, **श्रम** की पूर्ति भी सीमित होती है और **उद्यम** तो बहुत ही सीमित मात्रा में उपलब्ध होता है
- ❖ इस प्रकार **आधुनिक अर्थशास्त्रियों** के अनुसार ‘भूमि की भांति अन्य साधनों में भी सीमितता का गुण पाया जाता है इसलिए वे भी लगान प्राप्त कर सकते हैं’

आधुनिक सिद्धांत का आधार

ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्री प्रो. वीजर ने उत्पादन के समस्त साधनों को दो भागों में बांटा है-

विशिष्ट साधन और अविशिष्ट साधन

विशिष्ट साधन (Specific) वे होते हैं जिनका उपयोग केवल एक विशिष्ट कार्य के लिए ही किया जा सकता है और जिसमें गतिशीलता बिल्कुल नहीं होती है।

अविशिष्ट साधन (Non-Specific) वे होते हैं जिनका उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जा सकता है और जिनमें पूर्ण रूप से गतिशीलता पायी जाती है।

विशिष्टता से संबंधित तीन बातें

- विशिष्टता एक गुण है जो किसी समय में किसी भी साधन प्राप्त कर सकता है
- जो साधन आज विशिष्ट है, भविष्य में अविशिष्ट हो सकता है
- वास्तविक संसार में कोई भी साधन न तो पूर्ण रूप से विशिष्ट होता है और न ही पूर्ण रूप से अविशिष्ट होता है

इसके अनुसार,

प्रो. वीजर के अनुसार, "लगान विशिष्टता का भुगतान है जो कि एक साधन प्रायः आंशिक रूप से विशिष्ट और आंशिक रूप से अवशिष्ट होता है इसलिए एक साधन के पुरस्कार में उस सीमा तक लगान का अंश होता है जिससे सीमा तक वो साधन विशिष्ट होता है"

श्रीमती जॉन रोबिनसन के अनुसार, "किसी साधन का लगान उस साधन के द्वारा उपार्जित व आधिक्य है जो उसे ऐसे न्यूनतम राशि के ऊपर उपलब्ध होता है जिसके कारण यह अपना कार्य करने के लिए आकर्षित होता है"

एक साधन की दो प्रकार की आय होती है :

- वर्तमान या वास्तविक आय
- हस्तांतरण आय या अवसर लागत

❖ किसी साधन को वर्तमान में जो आय प्राप्त होती है यह उसकी **वास्तविक आय** है
❖ **विकल्प आय** हैं जो साधन को किसी अन्य प्रयोग में लाने पर प्राप्त हो सकती है

यह आवश्यक है कि उसे कम से कम विकल्प आय या हस्तांतरण आय के बराबर भुगतान किया जाए अन्यथा वह साधन दूसरे उद्योग में चला जाएगा

साधारणतः साधनों की वर्तमान स्थानांतरण आय से अधिक होती है अतः वास्तविक आय तथा स्थानांतरण आय के अंतर को आर्थिक लगान कहते हैं

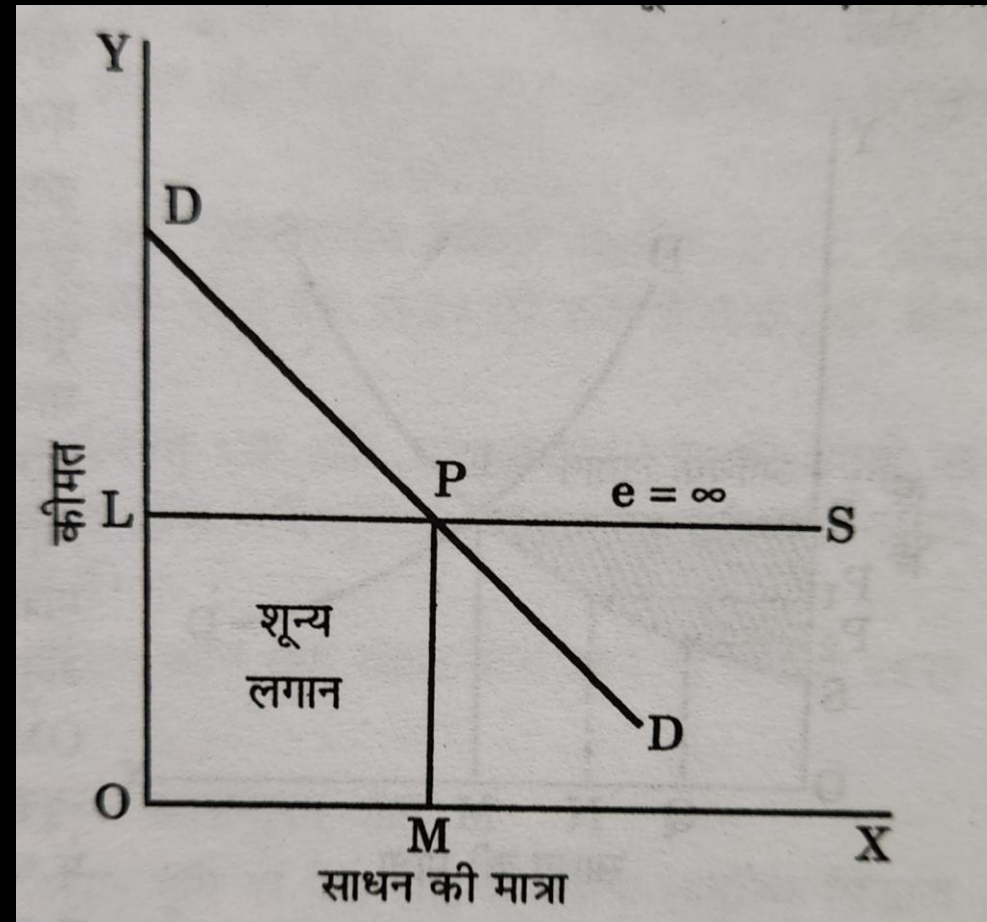
लगान = वास्तविक आय - हस्तांतरण आय या अवसर लागत

लगान उत्पन्न होने के कारण

जब उत्पादन के साधन की पूर्ति पूर्णतः लोचदार है तो लगान शून्य होता है

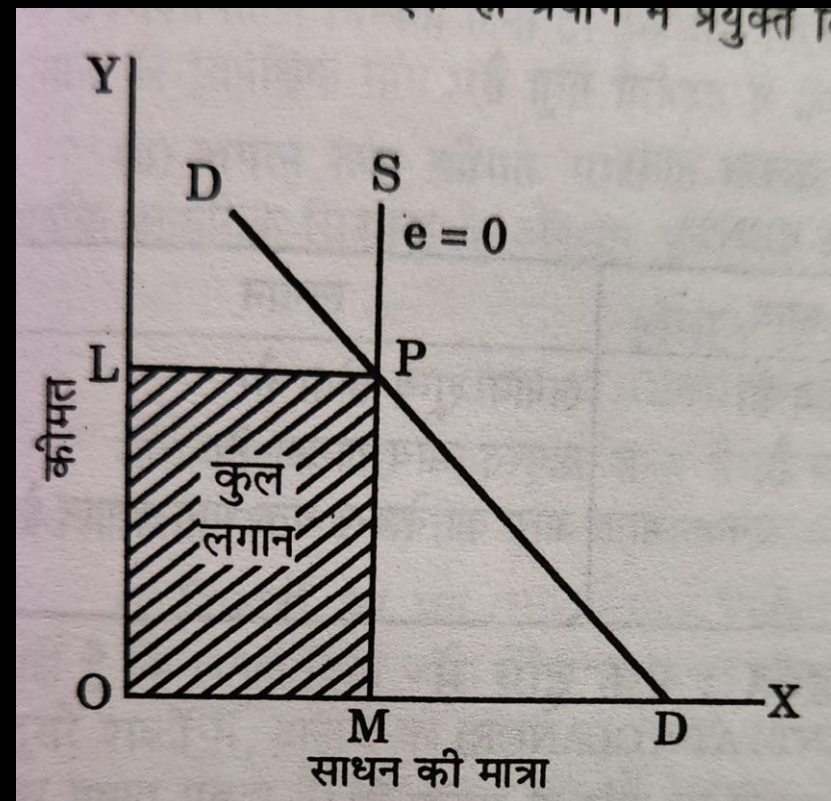
एक साधन जिसकी पूर्ति पूर्णतः लोचदार है उसका अर्थ होता है कि एक विशेष कीमत पर साधन कितनी ही इकाइयों उपलब्ध हो सकती है और इस विशेष कीमत से नीचे कीमत पर साधन की पूर्ति शून्य होगी एक साधनापूर्ण लोचदार इसका अर्थ है कि साधन पूर्णता अविशिष्ट है।

दूसरे शब्दों में साधन की पूर्णतया लोचदार पूर्ति तथा पूर्णतया अविशिष्ट साधना दोनों एक ही बात है इसलिए ऐसे साधनों की पूर्ति रेखा एक सीधी पड़ी होगी



जब उत्पादन के साधन की पूर्ति पूर्णता है बेलोचदार हो तो कुल आय ही लगान होती है

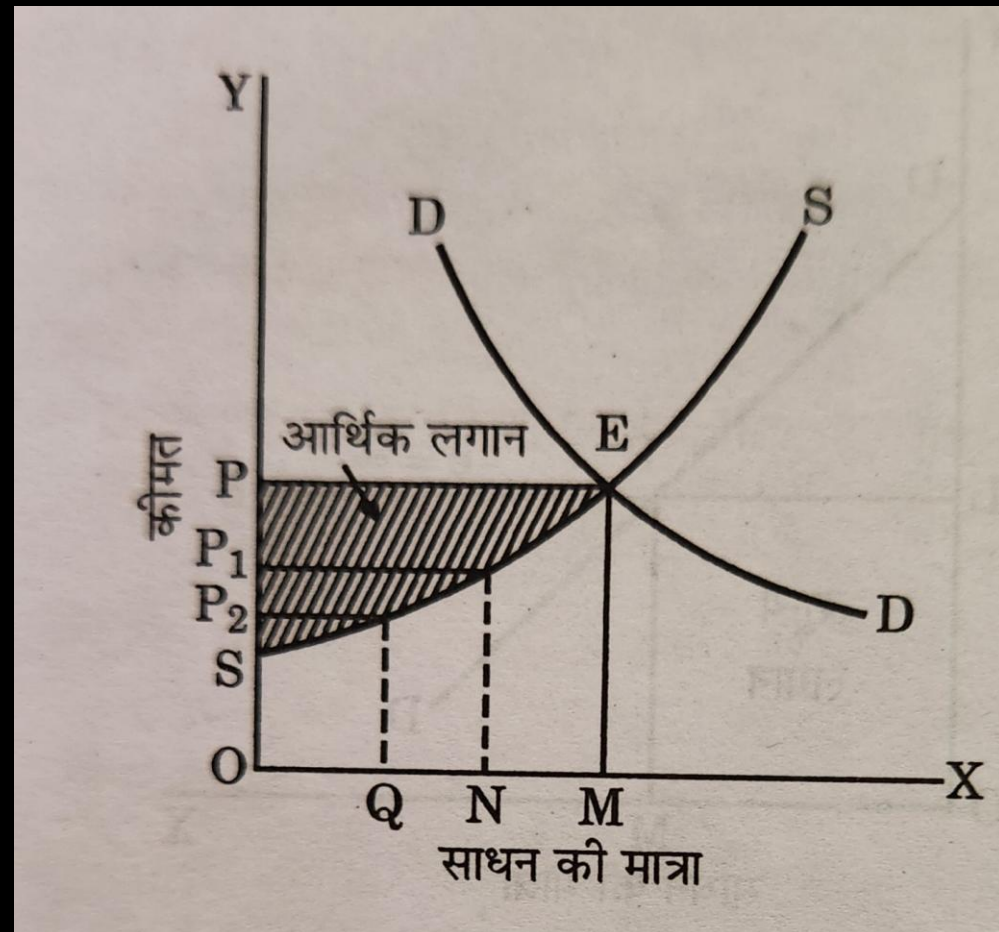
यदि साधनों की पूर्ति पूर्णतया बेलोचदार है पूर्णतया विशिष्ट है ऐसे साधनों की पूर्ति स्थिर होती है और वे एक ही प्रयोग में प्रयुक्त किए जाते हैं।



साधन की पूर्णता लोचदार से कम अवस्था में लगान

वास्तविकता में साधनों की पूर्ति ना तो पूर्णतः है लोचदार होती है और नहीं पूर्णतः बेलोचदार होती है बल्कि पूर्णतः लोचदार से कम अर्थात् मूल्य सापेक्ष होती है।

सभी साधन आंशिक रूप से अवशिष्ट या आंशिक रूप से विशिष्ट होते हैं इसलिए इनकी समस्त कीमत या आय में एक भाग लगान होता है।



लगान की आधुनिक सिद्धांत

- लगान केवल भूमि पर ही नहीं उत्पादन के सभी साधनों पर प्राप्त हो सकता है।
- लगान उत्पन्न होने के कारण साधन की सीमितता एवं विशिष्टता है
- साधन की वर्तमान आय से हस्तांतरण आय को घटाकर लगान का निर्धारण किया जा सकता है।
- पूर्णतः लोचदार पूर्ति पर कोई लगान नहीं होता है।
- पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति पर कुल वर्तमान आय ही लगान है।
- साधन की पूर्ति पूर्णतया लोचदार से कम या बेलोचदार होने पर लगान उत्पन्न होने लगता है क्योंकि साधन के आंशिक रूप से विशिष्ट तथा आंशिक रूप से अवशिष्ट होने पर वास्तविक अवसर लागत से अधिक हुआ करती है।
- लगान शून्य हो सकता है परंतु कभी भी ऋणात्मक नहीं हो सकता क्योंकि अवसर लागत वास्तविक आय से अधिक नहीं हो पाती।